ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

स्वतंत्रता पूर्व, स्वतंत्रता पश्चात् तथा वर्तमान काल में भारतीय शिक्षा संस्थाओं में चित्रकला का पाठ्यक्रम

Course Of Painting In Indian Educational Institutions In Pre-Independence, Post-Independence and Present Times

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

रश्मि बाजपेयी
अस्सिटेंट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग,
एस. एन. सेन डिग्री कॉलेज
कानपुर विश्वविद्यालय,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

पाठ्यक्रम को अंग्रेजी में Curriculum कहते है Curriculum शब्द ग्रीक भाषा के शब्द Currere से निकला है जिसका अर्थ होता है। घोड़े की दोड़ की निर्धारित दूरी। शिक्षा में इस शब्द का अर्थ होता है कि एक वर्ष में क्या–क्या सीखना प्रस्तावित किया गया है। ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिये, उसके क्या उद्देश्य होने चाहिये'कलांति ददातीति कला' अर्थात् सौन्दर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु का नाम कला है। भारत में भी कला का स्वरूप धार्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक मान्यताओं के आधार पर परिवर्तित एवं परिवर्द्धित होता रहा है।

यह अत्यन्त आवश्यक है कि शिक्षा का कला व्यवहार से समन्वय हो। छात्रों को केवल सिद्धान्तों पर आधारित न होकर सेमीनारों, कार्यशालाओं में भी प्रतिभाग लेते रहना चाहिये। कला शिक्षा वास्तविक और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिये साथ ही व्यक्तिगत आकांक्षाओं का भी ध्यान रखना चाहिये।

अतः हमें नये सामाजिक परिवेशों के साथ दृश्य कलाओं का तालमेल बैठाना होगा। कला शोध एवं कला तकनीक के महत्व को समझकर ही हमें कला शिक्षा के पाठ्यक्रम को डिजाइन करना चाहिए। कला शिक्षा के भविष्य के लिये यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

The course is called Curriculum in English, the word Curriculum is derived from the Greek word Currere which means. Stipulated distance of horse race In education, this word means what is proposed to be learned in a year. Knowledge should be imparted, what should be its purpose, 'Kalanti Dadatiati Kala' means the name of the object which provides happiness through the expression of beauty. In India also, the nature of art has changed and changed based on religious, political and social beliefs.

It is very important that education be coordinated with art practice. Students should not only participate in seminars, workshops but also based on principles. Art education should be suited to real and social needs as well as personal aspirations should be taken care of.

Therefore, we have to align the visual arts with the new social environments. We should design the curriculum of art education only by understanding the importance of art research and art techniques. This is very important for the future of art education.

मुख्य शब्द : चित्रकला का पाठ्यक्रम।
Painting Course.

प्रस्तावना

''पवित्रता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास नागरिक व सामाजिक भावना, सामाजिक कुशलता में वृद्धि और राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण व प्रसार प्राचीन शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य थे।''

–ए0एल0 अलतेकर

पाठ्यक्रम को अंग्रेजी में Curriculum कहते है Curriculum शब्द ग्रीक भाषा के शब्द Currere से निकला है जिसका अर्थ होता है। घोड़े की दोड़ की निर्धारित दूरी। शिक्षा में इस शब्द का अर्थ होता है कि एक विशेष अवधि और

एक विशेष कक्षा के विद्यार्थियों से ज्ञान की कितनी दूरी तय करना आवश्यक माना गया है अर्थात उनके लिये एक वर्ष में क्या–क्या सीखना प्रस्तावित किया गया है।

महाविद्यालयों में किसी भी कक्षा मे किसी विषय को एक वर्ष में किस प्रकार पढ़ाया जाना है अथवा क्या–क्या सीखना आवश्यक समझा गया है उसको पाठ्यक्रम कहा जाता है और उसका निर्माण विश्वविद्यालयों के बोर्ड ऑफ स्टडीज तथा Academic Councils करते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

किसी स्तर पर या आयु वर्ग में या किसी विशेष कक्षा में विद्यार्थियों को क्या–क्या ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिये, उसके क्या उद्देश्य होने चाहिये और कैसे प्रदान किया जाना चाहिये? उसके बारे में विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं School of Philosophy ने अपने–अपने विचार दिये हैं, जैसे–

आदर्शवादी दर्शन के अनुसार– विद्यार्थियों को उच्च आदर्शो उच्च मूल्यों, उत्तम संस्कारों वाला ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिये। प्राचीन काल के ग्रीक दार्शनिकों सुकरात, प्लेटो, स्पिनोजा ने, मध्य और आधुनिक काल के विचारकों जैसे–लिबनिज, कान्ट, हीगल, फ्रोबेल और आधुनिक युग के दार्शनिकों जैसे अरविन्द, स्वामी विवेकानन्द आदि ने इस पर बल दिया।

प्रकृतिवादी दार्शनिकों के अनुसार

रूसो, थॉमस हॉब्स, हबर्ट स्पेन्सर आदि ने इस बात पर बल दिया कि विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये जिससे जन्मजात् शक्तियों का पूर्ण विकास हो उन्हें प्रकृति और समाज सम्बन्धी सभी विषयों का ज्ञान देने वाले शैक्षणिक और पाठ्योत्तर कार्य जैसे–भ्रमण आदि करना चाहिये।

प्रयोजनवादी दार्शनिकों के अनुसार– बेकन, पीटर्स जॉन, ड्यूवी के अनुसार नैतिक मूल्य कुछ भी नहीं होते अतः विद्यार्थियों को उपदेश देने के बजाये स्वयं खोज करने का अनुभव करने को प्रेरित करें।

यथार्थवादी दार्शनिक के अनुसार

विद्यार्थियों को संसार की वास्तविकता को समझने और उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने वाले विषय, अनुभव प्रदान करें। उनको निम्नांकित विषयों की शिक्षा जानी चाहिये यथा–प्राकृतिक विज्ञान, कला संस्कृति, व्यवसायिक शिक्षा गणित आदि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि किसी भी विषय का पाठ्यक्रम क्यों न हो उसका उद्देश्य समाज का सर्वांगीण विकास हो। 'कलांति ददातीति कला' अर्थात् सौन्दर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु का नाम कला है। कला विश्व की परिचालित शक्ति है जो मानव समुदाय को एकसूत्र में बाँधती है।

किसी भी देश की संस्कृति एवं सभ्यता का मूल्यांकन कला के माध्यम से किया जाता है। सौन्दर्य के प्रतिमान देश, काल तथा परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते है। भारत में भी कला का स्वरूप धार्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक मान्यताओं के आधार पर परिवर्तित एवं परिवर्द्धित होता रहा है।

अजन्ता जोगीमारा, बाघ एलोरा आदि गुफाओं का वर्णन कला का स्वर्णिम पृष्ठ रहे हैं। मध्यकाल की लघुकला प्रसिद्ध है। राजस्थानी, पहाड़ी व इरानी कला के समन्वय से इसी समय नवीन कला का उद्भव हुआ जो मुगल कला के नाम से प्रसिद्ध हुई।

भारतीय कला के पाठ्यक्रम को जानने से पहले उसके विकासक्रम को समझने के लिये 19वीं शताब्दी के मध्य तथा 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में विद्यमान सामाजिक व आर्थिक जीवन में हो रहे परिवर्तनों को समझना आवश्यक है। भारत में अंग्रेजों ने 1600ई0 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थाना की। अंग्रेजों का आगमन मुगल सम्राट अकबर के समय प्रारम्भ हो चुका था। जहाँगीर के समक्ष चित्रकला अपने सवर्णकाल पर थी परन्तु औरंगजेब के समक्ष तथा परवर्ती मुगलशासकों की कला के प्रति अरूचि के कारण कलाकार दिल्ली दरबार छोड़कर जाने लगे। इस समय इंग्लैण्ड के चित्रकारों 'थॉमस डेनियल' तथा 'टिली कैटिल' ने भारतीय कलाकरों को प्रभावित किया परिणामस्वरूप ईस्ट इण्डिया कम्पनी, अंग्रेज सत्ता तथा भारतीय व विदेशी कलाकारों के सहयोग से कला की एक नवीन शैली विकसित हुई जिसे कम्पनी शैली के नाम से जाना गया। 18वीं शताब्दी तक यह शताब्दी तक यह शैली अबाध गति से विकसित होती गई।

राजा रवि वर्मा इस शैली के प्रथम भारतीय चित्रकार थे जिन्होंने यूरोपीय तकनीक में भारतीय विषयों का चित्रण किया। इसी समय अंग्रेजों ने भारतीय चित्रकारों को यूरोपीय कला तकनीक में प्रशिक्षित करने के लिये मद्रास, कलकत्ता, लाहौर, मुम्बई तथा लखनऊ में कला विद्यालय खोले। यहाँ का वातावरण शिक्षण प्रणाली तथा सामग्री आदि यूरोपीय कला विद्यालय प्रणाली पर आधारित थी। भारतीय कला की उपेक्षा होने लगी। भरतीय कला पर पड़ रहे संकट को खत्म करने के लिये कुछ कलाकारों तथा कला समीक्षकों ने नवीन कला आन्दोलन प्रारम्भ किया। इसकी अगुवाई आचार्य अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने की। इसी बीच 1896 में ई0बी0 हैवेल ने मद्रास कला विद्यालय से कलकत्ता कला विद्यालय में प्राचार्य पद ग्रहण कर अवनीन्द्रनाथ का सहयोग दिया।

1907 ई0 में सर जॉन बुडरॉफ की सहायता से इण्डियन ''सोसायटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट'' की स्थापना की गयी जिसके 30 सदस्यों में से मात्र 5 भारतीय थे। कला प्रशिक्षण एवं संरक्षण का समस्त उत्तरदायित्व इसी संस्था का था। इस प्रथम पीढ़ी के विद्वानों से पर्सी ब्राउन, डॉ0 आनन्द कुमार स्वामी, रवीन्द्रनाथ टैगोर ई0बी0 हैवेल आदि थे।

बंगाल कला की उक्त कला के पश्चात् कला विकास का द्वितीय चरण प्रारम्भ हुआ। गगनेन्द्र नाथ ने धनवादी शैली से प्रेरणा ली। 1935 मे अमृता शेरगिल ने भारत आकार चित्र प्रदर्शनी की।

आधुनिक कला के विकास का तृतीय चरण स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् की कला प्रवृत्तियों से प्रारम्भ होता है। कलाकत्ता ग्रुप–73, नव गुजराती स्कूल, शिलपी चक्र आदि। 1948 में प्रोगेसिव आर्टिस्ट ग्रुप मुम्बई की स्थापना के हुई। 1954 ने राष्ट्रीय कला अकादमी की स्थापना के साथ ही जयपुर हाउस दिल्ली में राष्ट्रीय

आधुनिक कला दीर्घा की स्थापना हुई। इसके साथ अनेकों ग्रुपों की स्थापना के साथ एम0एस0 विश्वविद्यालय, बडोदरा में ललित कला संकाय की स्थाना के पश्चात कला शिक्षा की धारणा में बुनियादी परिवर्तन आया।

1980 का दशक कला की दृष्टि से क्रान्तिकारी परिवर्तन का दौर था। यह भारतीय कला का चतुर्थ चरण था। फंवासी का प्रयोग, चित्रकला, मूर्तिकला मिश्रित माध्यम, ग्राफिक कला तथा इन्स्टालेशन आदि में नवीन प्रयोग हो रहे थे। एम0एफ0 हुसैन, सूजा रजा, अंजली, इला मेनन, गणेश पाइन, तैयब मेहता, सतीश गुजराल आदि प्रमुख चित्रकार है।

कला का महत्व निरन्तर नित प्रयोग में है। कला के उन्नयन व विकास में सरकारी व निजी कला दीर्घाओं का महत्वपूर्ण योगदान निरन्तर बढ़ रहा है। स्वाभाविक है कि समय–समय पर हो रहे परिवर्तिनों का चित्रकला के पाठ्यक्रम को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि विद्यार्थियों को इससे उचित लाभ प्राप्त हो सके और वह अपने विषय पर अधिकाधिक व नवीन जानकारी प्राप्त कर सके।

उन्नति के लिये तकनीकी एक सशक्त माध्यम है अतः नवीन तकनीकियों का प्रयोग अति आवश्यक है। वर्तमान युग विभिन्न तकनीकियों से पूर्ण है। जिसने दृश्यकलाओं को भी प्रभावित किया हैं कोई भी नई तकनीकी किसी भी विषय या कला का ह्रास नहीं करती वरन् उसको उन्नति के मार्ग पर ले जाती है। जैसे कम्प्यूटर के प्रयोग ने कला क्षेत्र के जगत में व्यापक प्रसार किया है। कम्प्यूटर तथा इंटरनेट के सहयोग से हम विश्व की कला संस्थाओं, गैलरियों तथा कलाकारों से सम्पर्क स्थापित कर लेते है। वह भी बिना किसी आवागमन के।

यह अत्यन्त आवश्यक है कि शिक्षा का कला व्यवहार से समन्वय हो। छात्रों को केवल सिद्धान्तों पर आधारित न होकर सेमीनारों, कार्यशालाओं में भी प्रतिभाग लेते रहना चाहिये। अकादमिक नियमों को पूर्ण करने के साथ ही स्वः रचनात्मकता का भी विकास करना अत्यन्त आवश्यक है। कला शिक्षा वास्तविक और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिये साथ ही व्यक्तिगत आकांक्षाओं का भी ध्यान रखना चाहिये।

कला पाठ्यक्रम के लिये कुछ तथ्यों पर विचार अनुकरणीय है यथा–

1. भारतीय कला और इतिहास को संदर्भ में रखकर विश्व कला का ज्ञान।
2. कला के मूल्यांकन के लिये विभिन्न दार्शनिक और सौन्दर्यशास्त्र के सिद्धान्त का ज्ञान।
3. कला शिक्षण के लिये संग्रहालय, पुस्तकालय तथा कला विथिका का उपलब्ध होना।
4. प्रयोगात्मक कार्यों के लिये उपयोगी संसाधनों का प्रयोग।
5. कला पाठ्यक्रम का जॉब ओरियेन्टेड होना अति आवश्यक है जिससे कलाकारों को आर्थिक परेशानियाँ न हो।
6. संगोष्ठियों तथा कला प्रदर्शनियों का समय–समय आयोजन होना चाहिये जिससे छात्रों की कला विषय पर आधारित जिज्ञासुओं का निवारण होता रहे।
7. अन्तः सम्बन्धित विषयों के साथ कला के सम्बन्ध पर आपेक्षित ज्ञान होना आवश्यक है।

निष्कर्ष

पाठ्यक्रम चाहें जैसा भी हो उसके शिक्षण के लिए समर्थ, योग्य और अनुभवी प्राध्यापक होना चाहिये। शिक्षा की पूर्ण सार्थकता तो शिक्षण छात्र तथा विषय तीनों पर ही आधारित होती है। जितना उपयुक्त शिक्षक का शिक्षण कार्य होगा उतना अधिक सारगर्भित प्रभाव छात्रों पर पड़ेगा। छात्रों को उपयोगी ज्ञान की प्राप्ति होने पर वह छात्रों तथा समाज दोनों के लिये लाभप्रद होगी। शिक्षकों को कार्य प्रदर्शन के समय विषय, आलेखन, आरेखन तथा वर्ण तूलिका का सम्पूर्ण प्रयोग, विधान तथा संचालन का दिशा–निर्देश देते रहना चाहिए। शिक्षा में सांस्कृतिक उद्देश्यों की पूर्ति होती रहनी चाहिये। जीवन के प्रत्येक अंग को उदात्त बनाने के लिये कला शिक्षा का उपयोग अत्यन्त लाभकारी है। जिस प्रकार सौन्दर्य सर्वव्यापी तत्व है उसी प्रकार कला को भी सर्वव्यापी मानकर शिक्षा में समायोजित करना श्रेष्ठतम तथा आवश्यक है। मानसिक शिक्षा के साथ–साथ कल्पना शक्ति तथा आत्मअभिव्यक्ति को भी सुदृढ़ बनाने के लिये उपयुक्त उपाय करने चाहिए।

अतः हमें नये सामाजिक परिवेशों के साथ दृश्य कलाओं का तालमेल बैठाना होगा। कला शोध एवं कला तकनीक के महत्व को समझकर ही हमें कला शिक्षा के पाठ्यक्रम को डिजाइन करना चाहिए। कला शिक्षा के भविष्य के लिये यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

डॉ0 राधाकृष्णन ने शिक्षा की आधुनिकतम परिभाषा को बहुत सारगर्भित शबदों में इस प्रकार व्यक्त किया है–''शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिये'' इस व्यक्तत्व पर कला की उस्थिति समाज निर्माण के लिये अति आवश्यक हो जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आधुनिक चित्रकला का इतिहास–र0वि0 साखलकर*
2. *भारत की चित्रला–रामकृष्ण दास*
3. *आधुनिक भरतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ–डॉ0 प्रेमचन्द्र गोस्वामी*
4. *भारतीय चित्रकला का विवेचन–आर0ए0 अग्रवाल*
5. *शिक्षा का वाहन कला–देवी प्रसाद*
6. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।*
7. *कला त्रैमासिक–कला शिक्षा विशेषांक, राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0, जुलाई से सितम्बर–2002*